

# مقایسه تفسیر قمی با روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کافی

فتحیه فتاحی زاده

مربی گروه علوم قرآن و حدیث دانشگاه قم

و دانشجوی دکتری دانشگاه قم

چکیده

در این نوشتار ضمن ارج نهادن به شخصیت برجسته و وثاقت و مقام علمی علی بن ابراهیم قمی، اعتبار تفسیر منسوب به او مورد نقد و بررسی قرار گرفته است. با توجه به این که تفسیر قمی موجود، تلفیقی از روایات ابوالفضل العباس از علی بن ابراهیم و ابوالجارود و روایات سایر مشایخ می باشد؛ و از طرف دیگر مرحوم کلینی در کتاب شریف کافی روایات تفسیری متعددی از قول استاد خود علی بن ابراهیم آورده است؛ نویسنده به منظور بررسی میزان اعتبار تفسیر قمی موجود، روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کتاب کافی را استخراج نموده و ضمن تطبیق تک تک آنها با روایات تفسیر قمی، فقط به یک مورد انطباق برخورد نموده است. لذا در این مقاله به این نتیجه دست می یابد که تفسیری که در اختیار شیخ کلینی بوده، متفاوت از تفسیری است که هم اکنون در دسترس ماست.

□

کلید واژه ها: علی بن ابراهیم قمی، تفسیر قمی، الکافی، محمد بن یعقوب کلینی، تفسیر مآثور، تفسیر ابوالجارود.

مقایسه

تفسیر قمی...



۷



## ۱. مقدمه

ابوالحسن علی بن ابراهیم بن هاشم قمی از عالمان و محدثان بزرگ و موثق شیعه و از مشایخ محمد بن یعقوب کلینی (ت ۳۲۹ق) است.<sup>۱</sup> وی صاحب کتب متعدد و از جمله کتاب التفسیر بوده است.

در این که آیا کتاب معروف به تفسیر قمی که هم اکنون در دست ماست، همان کتاب التفسیر است که نجاشی و شیخ طوسی و دیگران از آن یاد کرده‌اند، تردیدی جدی وجود دارد. برخی در انتساب مقدمه این تفسیر به علی بن ابراهیم تردید داشته، معتقدند این مقدمه از تفسیر نعمانی است.<sup>۲</sup> بنابراین، توثیق عام موجود در این مقدمه نسبت به راویان این تفسیر از ارزش و اعتبار ساقط است.<sup>۳</sup> علاوه بر آن که با تتبع در اسناد روایات این تفسیر، روشن می‌شود که افراد غالی، ضعیف و جاعل حدیث در سند بسیاری از این روایات حضور دارند،<sup>۴</sup> روشن است که این امر با توثیق آنها توسط شخصیتی چون علی بن ابراهیم قمی سازگار نیست. افزون بر این، مجموع این تفسیر توسط شخصی به نام ابوالفضل العباس بن محمد بن القاسم بن حمزه بن موسی بن جعفر علیه السلام گزارش شده است که در کتب رجالی یادی از وی نشده است.

روایات این تفسیر به سه دسته تقسیم می‌شود:

۱ □ روایات ابوالفضل العباس از علی بن ابراهیم به سندش از امام صادق علیه السلام.

۲ □ روایات همین شخص به سند خود از ابوالجارود از امام باقر علیه السلام.

۳ □ روایات وی از سایر مشایخ حدیثی‌اش.

از آن جا که کلینی از شاگردان علی بن ابراهیم بوده و تفسیر او را نیز در اختیار داشته و در کتاب کافی از مجموع ۱۶ هزار روایت، نزدیک به ۶ هزار روایت از وی نقل کرده است، بررسی مقایسه‌ای روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کافی با تفسیر قمی موجود می‌تواند تا حدودی روشن سازد که آیا این تفسیر از علی بن ابراهیم است یا خیر.



## ۲. مقایسه روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کافی و تفسیر قمی

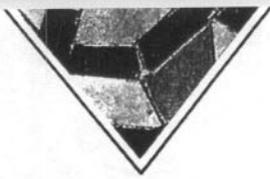
با تتبع در کتاب کافی مشخص شد که مرحوم کلینی در ضمن سه کتاب اصول، فروع و روضه، ۲۷۹ روایت تفسیری از علی بن ابراهیم قمی نقل کرده است. این روایات، یک به یک از نظر سند و متن، با آنچه در ذیل آیات مربوط در تفسیر قمی آمده مقایسه شد. جدولی که در پیش رو دارید بیانگر این تطبیق است.<sup>۵</sup>

□

### جدول مقایسه روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کافی با تفسیر قمی

| تفسیر القمی |   | الکافی |     |   | ردیف | تفسیر القمی |   | الکافی |     |   | ردیف |
|-------------|---|--------|-----|---|------|-------------|---|--------|-----|---|------|
| ص           | ج | ش      | ص   | ج |      | ص           | ج | ش      | ص   | ج |      |
| -           | - | ۲      | ۲۶۵ | = | ۱۸   | ۲۰۹         | ۲ | ۲      | ۳۶  | ۱ | ۱    |
| -           | - | ۴      | ۲۶۶ | = | ۱۹   | ۳۱۲         | ۱ | ۸      | ۴۳  | = | ۲    |
| ۲۶          | ۲ | ۳      | ۲۷۳ | = | ۲۰   | -           | - | ۱      | ۵۱  | = | ۳    |
| ۱۷۶         | ۲ | ۱      | ۲۸۵ | = | ۲۱   | ۱۵۲         | ۱ | ۵      | ۶۰  | = | ۴    |
| ۱۴۱         | ۱ | ۱      | ۲۸۶ | = | ۲۲   | ۳۶۳         | ۱ | ۲      | ۱۴۶ | = | ۵    |
| ۱۹۳         | ۲ | ۱      | ۲۸۶ | = | ۲۲   | ۴۲۲         | ۲ | ۴      | ۱۶۳ | = | ۶    |
| ۱۷۰         | ۱ | ۴      | ۲۸۹ | = | ۲۳   | -           | - | -      | -   | = | *    |
| -           | - | ۸      | ۳۰۷ | = | ۲۴   | ۲۱۶         | ۱ | ۲      | ۱۶۶ | = | ۷    |
| ۳۰۷         | ۱ | ۲      | ۳۷۸ | = | ۲۵   | -           | - | ۱      | ۱۸۵ | = | ۸    |
| ۱۷۵         | ۲ | ۲      | ۳۷۸ | = | ۲۵   | ۹۲          | ۱ | ۱۱     | ۱۸۵ | = | ۹    |
| ۳۵۸         | ۱ | ۸      | ۳۸۴ | = | ۲۶   | ۲۳          | ۲ | ۱۷     | ۱۸۹ | = | ۱۰   |
| ۱۴۲         | ۱ | ۷      | ۳۹۱ | = | ۲۷   | ۸۷          | ۲ | ۴      | ۱۹۱ | = | ۱۱   |
| ۳۷۱         | ۱ | ۱      | ۳۹۲ | = | ۲۸   | ۳۵۹         | ۱ | ۲      | ۱۹۱ | = | ۱۲   |
| ۶۱          | ۲ | ۳      | ۳۹۲ | = | ۲۹   | ۲۴۲         | ۱ | ۲      | ۱۹۴ | = | ۱۳   |
| -           | - | ۵      | ۴۰۰ | = | ۳۰   | ۱۴۰         | ۱ | ۵      | ۲۰۶ | = | ۱۴   |
| ۲۴۶         | ۱ | ۳      | ۴۰۱ | ۱ | ۳۱   | ۲۴۶         | ۲ | ۱      | ۲۱۲ | = | ۱۵   |
| ۲۴۷         | ۱ | ۴      | ۴۱۲ | = | ۳۲   | ۱۴          | ۲ | ۲      | ۲۱۶ | = | ۱۶   |
| ۵۵          | - | ۲۵     | ۴۱۷ | = | ۳۳   | ۳۶۷         | ۱ | ۶      | ۲۲۹ | = | ۱۷   |





| تفسیر القمی |        | الكافی |     |   | ردیف | تفسیر القمی |        | الكافی      |     |   | ردیف |
|-------------|--------|--------|-----|---|------|-------------|--------|-------------|-----|---|------|
| ص           | ج      | ش      | ص   | ج |      | ص           | ج      | ش           | ص   | ج |      |
| ۱۲۹         | ۱      | ۱۹     | ۹۲  | = | ۵۷*  | -           | -      | ۳۵          | ۴۱۸ | = | ۳۴   |
| -           | -      | ۵      | ۱۱۰ | = | ۵۸   | ۳۸۵         | ۲      | ۴۷          | ۴۲۲ | = | ۳۵   |
| ۱۴۴         | ۱      | ۸      | ۱۱۴ | = | ۵۹   | ۸۰          | ۲      | ۵۱          | ۴۲۲ | = | ۳۶   |
| ۳۱۹         | ۲      | ۵      | ۱۲۵ | = | ۶۰   | ۲۵۱         | ۲      | ۷۶          | ۴۲۷ | = | ۳۷   |
| ۳۵۱         | ۲      | ۴      | ۱۲۸ | ۲ | ۶۱   | ۳۱۳         | ۱      | ۸۷          | ۴۳۰ | = | ۳۸   |
| ۱۳۰         | ۱      | ۱      | ۱۵۰ | = | ۶۲   | ۴۶          | ۱      | ۸۹          | ۴۳۱ | = | ۳۹   |
| ۳۶۳         | ۱      | ۲۸     | ۱۵۶ | = | ۶۳   | -           | -      | ۱           | ۵۳۸ | = | ۴۰   |
| ۱۸          | ۲      | ۱      | ۱۵۷ | = | ۶۴   | ۲۴۷<br>۲۴۸  | ۱      | ۲           | ۷   | ۲ | ۴۱   |
| -           | -      | ۱۶     | ۱۸۲ | = | ۶۵   | ۲۸۹         | ۲      | ۳           | ۷   | = | ۴۲   |
| -           | -      | ۲      | ۱۸۴ | = | ۶۶   | ۱۵۴         | ۲      | ۱           | ۱۲  | = | ۴۳   |
| ۲۱۶         | ۱      | ۶      | ۲۱۴ | = | ۶۷   | ۱۵۵         | ۲      | ۲           | ۱۲  | = | ۴۴   |
| ۱۴۱         | ۲      | ۱      | ۲۱۷ | = | ۶۸   | ۸۴          | ۲      | ۳           | ۱۲  | = | ۴۵   |
| ۲۶۶         | ۲      | ۶      | ۲۱۸ | = | ۶۹   | ۶۲<br>۸۴    | ۱<br>۱ | ۱           | ۱۴  | = | ۴۶   |
| ۳۹۰         | ۱      | ۱۰     | ۲۱۹ | = | ۷۰   | ۳۱۵<br>۳۵۸  | ۲      | ۱<br>۴<br>۵ | ۱۵  | = | ۴۷   |
| -           | -      | ۱      | ۲۶۶ | = | ۷۱   | -           | -      | -           | -   | = | -    |
| ۲۰۰         | ۲      | ۲۳     | ۲۷۴ | = | ۷۲   | ۳۷۸         | ۲      | ۴           | ۱۶  | = | ۴۸   |
| -           | -      | ۱۷     | ۲۸۴ | = | ۷۳   | ۱۲۳         | ۲      | ۵           | ۱۶  | = | ۴۹*  |
| ۳۴۹         | ۱      | ۱۷     | ۳۴۱ | = | ۷۴   | -           | -      | ۶           | ۱۶  | = | ۵۰   |
| ۱۰۰         | ۲      | ۲      | ۳۵۷ | = | ۷۵*  | ۱۴۱         | ۱      | ۹           | ۲۱  | = | ۵۱   |
| -           | -      | ۱      | ۳۶۳ | = | ۷۶   | ۳۲۲         | ۲      | ۳           | ۲۴  | = | ۵۲   |
| ۱۴۹         | ۱      | ۳      | ۳۸۲ | = | ۷۷   | ۲۵۹<br>۳۷۳  | ۲      | ۶           | ۶۵  | = | ۵۳   |
| ۳۵۸<br>۷۹   | ۱<br>۲ | ۴      | ۳۹۷ | = | ۷۸   | -           | -      | ۴           | ۷۵  | = | ۵۴   |
| ۹۱<br>۲۳۶   | ۱      | ۱      | ۳۹۹ | = | ۷۹   | ۱۲۹         | ۱      | ۲           | ۸۱  | = | ۵۵   |
| ۳۷۶         | ۲      | ۲      | ۴۰۲ | = | ۸۰   | -           | -      | ۵           | ۸۵  | = | ۵۶   |





| تفسير القمي |   | الكافي |     |   | رديف | تفسير القمي |   | الكافي |     |   | رديف |
|-------------|---|--------|-----|---|------|-------------|---|--------|-----|---|------|
| ص           | ج | ش      | ص   | ج |      | ص           | ج | ش      | ص   | ج |      |
| -           | - | ٢      | ٧٥  | = | ١٠٥  | ١٤٩         | ١ | ٢      | ٤٠٤ | = | ٨١   |
| ٥١          | ٢ | ٢٦     | ٢٥٧ | = | ١٠٦  | -           | - | ٢      | ٤١١ | = | ٨٢   |
| ٣٩٧         | ٢ | ٣٢     | ٢٥٩ | = | ١٠٧  | ٧٩          | ٢ | ١      | ٤١٣ | = | ٨٣*  |
| ٣٦٦         | ٢ | ٤٤     | ٢٦٢ | = | ١٠٨  | ٧٩          | ٢ | ٢      | ٤١٣ | = | ٨٤   |
| ٢٥          | ٢ | ١      | ٢٧١ | = | ١٠٩  | ٢١١         | ١ | ٤      | ٤١٨ | = | ٨٥   |
| ٢٥          | ٢ | ١      | ٢٧٥ | = | ١١٠  | ٢١٢         |   |        |     |   |      |
| -           | - | ١٥     | ٢٩٤ | = | ١١١  | -           | - | ٢      | ٤٣١ | = | ٨٦   |
| ٦٣          | ١ | ٣      | ٣٠٠ | = | ١١٢  | ٣٧٧         | ٢ | ٤      | ٤٣٢ | = | ٨٧   |
| ٣٠          | ٢ | ٢٧     | ٣١٧ | = | ١١٣  | ٣٣٨         | ٢ | ١      | ٤٤١ | = | ٨٨   |
| ٣٣٣         | ٢ | ١١     | ٤٤٤ | = | ١١٤  | ٣٣٨         | ٢ | ٣      | ٤٤٢ | = | ٨٩   |
| ٣٣٥         | ٢ | ١٨     | ٤٤٦ | = | ١١٥  | ٣٣٨         | ٢ | ٥      | ٤٤٢ | = | ٩٠   |
| ١٤٩         | ١ | ٤      | ٤٥٨ | = | ١١٦  | ٢٧٧         | ٢ | ٣      | ٤٥٠ | = | ٩١*  |
| -           | - | ١٦     | ٥٠١ | = | ١١٧  | ٨٣          | ١ | ١      | ٤٥١ | ٢ | ٩٢*  |
| ٩٣          | ١ | ١٧     | ٥٠٢ | = | ١١٨  | ٢٥٩         | ٢ | ١      | ٤٦٦ | = | ٩٣   |
| ١٢٧         | ١ | ١      | ٥٠٢ | = | ١١٩  | -           | - | ٢      | ٤٧٩ | = | ٩٤   |
| ٢١٨         | ١ | ٢      | ٥٦٤ | = | ١٢٠  | ٢٥٩         | ٢ | ٨      | ٤٨٤ | = | ٩٥   |
| -           | - | ١      | ٥٦٦ | = | ١٢١  | ٢٥٤         | ١ | ٤      | ٥٠٢ | = | ٩٦   |
| ١٥٢         | ١ | ٣      | ٣٤  | ٤ | ١٢٢  | ٣٦١         | ١ | ١      | ٥٢٢ | = | ٩٧   |
| -           | - | ٤      | ٤٦  | = | ١٢٣  | ٦٦          | ١ | ٦      | ٦٢٨ | = | ٩٨*  |
| ٤٢٥         | ٢ | ٥      | ٤٦  | ٤ | ١٢٤  | ٣٤٤         | ١ | ٣      | ٦٣٧ | = | ٩٩   |
| ٧٢          | ١ | ٣      | ٥٢  | = | ١٢٥  | -           | - | ٢      | ٤   | ٣ | ١٠٠  |
| ٢١٨         | ١ | ٥      | ٥٥  | = | ١٢٦  | -           | - | ١٣     | ١٨  | = | ١٠١  |
| ١٩          | ٢ | ٦      | ٥٥  | = | ١٢٧  | -           | - | ٥      | ٢٥  | = | ١٠٢  |
| ٩٢          | ١ | ١      | ٦٠  | = | ١٢٨  | -           | - | ٤      | ٣٠  | = | ١٠٣  |
| ٢٩٥         | ٢ | ٦      | ١٥٧ | = | ١٢٩  | -           | - | ٢      | ٦٢  | = | ١٠٤  |

مقايسه  
تفسير قمي...





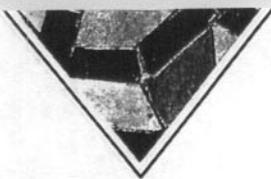
| تفسیر القمی |        | الكافی |     |   | ردیف     | تفسیر القمی |   | الكافی |     |   | ردیف     |
|-------------|--------|--------|-----|---|----------|-------------|---|--------|-----|---|----------|
| ص           | ج      | ش      | ص   | ج |          | ص           | ج | ش      | ص   | ج |          |
| ۱۶۴         | ۱      | ۲      | ۳۵۲ | = | ۱۵۴      | ۱۰۸         | ۱ | ۱      | ۲۲۳ | = | ۱۳۰      |
| ۱۶۳<br>۳۶۳  | ۱<br>۲ | ۸      | ۳۵۸ | = | ۱۵۵      | ۱۰۸         | ۱ | ۲      | ۲۲۶ | = | ۱۳۱      |
| ۱۵۵         | ۱      | ۱      | ۳۶۲ | = | ۱۵۶      | -           | - | ۴      | ۲۲۷ | = | ۱۳۲      |
| ۱۵۵         | ۱      | ۲      | ۳۶۳ | = | ۱۵۷      | ۱۰۸         | ۱ | ۱      | ۲۶۴ | = | ۱۳۳      |
| ۱۹۵         | ۲      | ۱      | ۳۸۷ | = | ۱۵۸      | ۱۰۸         | ۱ | ۱      | ۲۶۶ | = | ۱۳۴      |
| ۱۳۹         | ۲      | ۱      | ۴۱۴ | = | ۱۵۹      | -           | - | ۲      | ۲۸۹ | = | ۱۳۵      |
| ۷۷          | ۱      | ۱      | ۴۳۴ | = | ۱۶۰      | ۲۸۲         | ۱ | ۳      | ۲۹۰ | = | ۱۳۶      |
| ۱۱۵         | ۲      | ۹      | ۴۴۲ | = | ۱۶۱<br>* | ۱۹۷         | ۱ | ۱      | ۳۳۷ | = | ۱۳۷      |
| ۱۳۶         | ۱      | ۱      | ۴۴۸ | = | ۱۶۲      | ۱۸۷         | ۱ | ۲      | ۳۹۴ | = | ۱۳۸      |
| ۱۳۶         | ۱      | ۶      | ۴۴۹ | = | ۱۶۳      | ۱۸۲         | ۱ | ۲      | ۳۹۶ | = | ۱۳۹      |
| -           | -      | ۱      | ۴۹۸ | = | ۱۶۴      | ۶۴          | ۱ | ۱      | ۴۳۱ | = | ۱۴۰      |
| ۱۰۸         | ۲      | ۴      | ۵۲۲ | = | ۱۶۵      | -           | - | ۲      | ۴۶۷ | = | ۱۴۱      |
| ۳۶۴         | ۲      | ۵      | ۵۲۷ | = | ۱۶۶      | ۲۱۹         | ۱ | ۱۷     | ۴۹۲ | = | ۱۴۲      |
| -           | -      | ۴      | ۵۴۴ | = | ۱۶۷      | ۸۴          | ۲ | ۶      | ۵۰۰ | = | ۱۴۳      |
| ۱۵۰<br>۳۳۴  | ۲<br>۱ | ۶      | ۵۴۶ | = | ۱۶۸      | ۱۹۷         | ۱ | ۱۵     | ۵۱۰ | = | ۱۴۴      |
| ۳۳۷         | ۱      | ۷<br>۸ | ۵۴۸ | = | ۱۶۹      | ۷۱          | ۱ | ۱      | ۵۱۶ | = | ۱۴۵      |
| -           | -      | ۵      | ۵۵۵ | = | ۱۷۰      | ۷۰<br>۷۱    | ۱ | ۱۰     | ۵۲۱ | = | ۱۴۶<br>* |
| ۱۹۵         | ۲      | ۵۳     | ۵۶۸ | = | ۱۷۱<br>* | ۳۰۶         | ۱ | ۱      | ۲۲  | = | ۱۴۷<br>* |
| ۴۸          | ۲      | ۹      | ۳   | = | ۱۷۲      | ۳۷۷         | ۲ | ۳      | ۶۲  | = | ۱۴۸      |
| -           | -      | ۴      | ۸   | = | ۱۷۳      | ۱۳۲         | ۱ | ۲      | ۱۲۸ | = | ۱۴۹      |
| ۷۸          | ۲      | ۱      | ۱۲  | = | ۱۷۴      | ۱۵۹         | ۲ | ۶      | ۱۴۵ | = | ۱۵۰      |
| ۷۶          | ۱      | ۶      | ۴۱  | = | ۱۷۵<br>* | -           | - | ۱      | ۲۶۲ | = | ۱۵۱      |
| ۷۴          | ۱      | ۱      | ۶۴  | = | ۱۷۶      | ۱۳۱         | ۱ | ۱      | ۲۹۹ | = | ۱۵۲      |
|             |        |        |     |   |          | ۱۳۱         | ۱ | ۲      | ۳۰۰ | = | ۱۵۳      |



| تفسير القمي |   | الكافي      |            |   | رديف | تفسير القمي       |   | الكافي |     |   | رديف     |
|-------------|---|-------------|------------|---|------|-------------------|---|--------|-----|---|----------|
| ص           | ج | ش           | ص          | ج |      | ص                 | ج | ش      | ص   | ج |          |
| -           | - | ١<br>٢      | ٤١         | = | ٢٠٢  | ٢٧٣               | ٢ | ٢      | ٦٥  | = | ١٧٧      |
| -           | - | ١٥          | ٥٥         | = | ٢٠٣  | ٣٧٤               | ٢ | ١      | ٩٧  | = | ١٧٨      |
| ١٥٩         | ١ | ٢           | ٨٣         | = | ٢٠٤  | ٧٣                | ١ | ١      | ١١٣ | = | ١٧٩      |
| ٩٥          | ١ | ١           | ٨٤         | = | ٢٠٥  | -                 | - | ١      | ١٢٣ | = | ١٨٠      |
| ١٣٣         | ١ | ١           | ٩٩         | = | ٢٠٦  | ١٥٣               | ١ | ٢      | ١٤٥ | = | ١٨١      |
| ١٥٩         | ١ | ٢           | ١٠٠        | = | ٢٠٧  | ١٣٧               | ١ | ٢      | ١٤٦ | = | ١٨٢      |
|             |   | ٣           | ١٠١        |   |      | ٣٥٣               | ٢ | ١      | ١٥٢ | = | ١٨٣      |
|             |   | ٤           | ١٠٢        |   |      | ١٠٢               | ٢ | ٩      | ١٨٧ | = | ١٨٤      |
| ١٧٦         | ٢ | ٢           | ١١٩        | = | ٢٠٨  | ١٦٢               | ١ | ١      | ٢٠٢ | = | ١٨٥      |
| ١٧٦         | ٢ | ٢           | ١٣٥        | = | ٢٠٩  | ١٦٢               | ١ | ٨      | ٢٠٤ | ٦ | ١٨٦      |
| ٩٧          | ٢ | ٧           | ٢٤١        | = | ٢١٠  | ١٦٥               | ١ | ١      | ٢٣٤ | = | ١٨٧<br>* |
| ١٦٧<br>١٦٨  | ١ | ٢<br>٣      | ٢٤٥        | = | ٢١١  | ١٥٩               | ٢ | ٥      | ٢٧٧ | = | ١٨٨      |
| ١٦٧<br>١٦٨  |   | ٤<br>١٥     |            |   |      | ٢٤٦<br>٢٤٧        | = | ٢١٢    | ٣٧٢ | ١ | ١        |
| ١٦٧         | ١ | ١<br>٦      | ٢٧١<br>٢٧٢ | = | ٢١٣  | ١٣٨               | ٢ | ٥      | ٢٨٧ | = | ١٩٠      |
| -           |   | -           | ٩          |   |      | ٢٨٤               | = | ٢١٤    | ٢٣٥ | ١ | ١        |
| ١٦٧         | ١ | ٢           | ٢٨٩        | = | ٢١٥  | ١٦١               | ٢ | ٤      | ٤٣١ | = | ١٩٢      |
| ١٦٩<br>٦٥   | ١ | ١           | ٣٥٨        | ٧ | ٢١٦  | ١٦١               | ٢ | ١٦     | ٤٣٣ | = | ١٩٣      |
| ٩٤          |   | ٢<br>٤<br>٢ |            |   |      | ٢٧٩<br>٣٨٠<br>٣٨١ | = | ٢١٧    | ٨٤  | ٢ | ٧        |
| ٣٧٣         | ٢ | ٥           | ٣٨٥        | = | ٢١٨  | ٣٩٣               | ٢ | ١      | ٤٥٥ | = | ١٩٥      |
| ١٨٩         | ١ | ٦           | ٣٩٨        | = | ٢١٩  | ٢٢٩               | ١ | ٧      | ٤٨٩ | = | ١٩٦      |
| ٧٣          | ١ | ١           | ٤٤٣        | = | ٢٢٠  | ١٨٩               | ١ | ٣      | ٤   | ٧ | ١٩٧      |
| ٦٥          | ٢ | ٢           | ٤٤٧        | = | ٢٢١  | ١٨٩               | ١ | ٧      | ٥   | = | ١٩٨      |
| ٣٣٤         | ٢ | ١           | ٤٤٩        | = | ٢٢٢  | ٦٥                | ١ | ١      | ٢٥  | = | ١٩٩      |
| ٣٤٩         | ٢ | ٤           | ٤٥٠        | = | ٢٢٣  | -                 | - | ١      | ٣٩  | = | ٢٠٠      |
| -           | - | ٢           | ٤٥٠        | = | ٢٢٣  | -                 | - | ٢      | ٤٥  | = | ٢٠١      |

مقايسه  
تفسير قمي...





| تفسیر القمی  |        | الكافی     |     |   | ردیف     | تفسیر القمی |        | الكافی     |            |   | ردیف     |
|--------------|--------|------------|-----|---|----------|-------------|--------|------------|------------|---|----------|
| ص            | ج      | ش          | ص   | ج |          | ص           | ج      | ش          | ص          | ج |          |
| ۵۴           | ۱      | ۴۳۸        | ۲۹۰ | = | ۲۴۷      | ۴۲۲         | ۲      | ۵          | ۴۵۰        | = | ۲۲۴      |
| -            | -      | ۴۴۵        | ۲۹۱ | = | ۲۴۸      | ۳۷۵         | ۲      | ۴          | ۴۵۲        | = | ۲۲۵      |
| ۲۵۰<br>۴۴-۴۵ | ۲<br>۱ | ۴۷۱<br>۴۷۲ | ۳۰۴ | = | ۲۴۹      | ۱۸۱         | ۱      | ۵<br>۷     | ۴۵۲<br>۴۵۳ | = | ۲۲۶      |
| ۹۱           | ۱      | ۴۷۳        | ۳۰۵ | = | ۲۵۰      | ۱۷۹         | ۱      | ۱          | ۴۶۰        | = | ۲۲۷      |
| -            | -      | ۴۸۲        | ۳۱۰ | = | ۲۵۱      | ۱۴۷         | ۱      | ۱۵         | ۴۶۲        | = | ۲۲۸      |
| ۴۲۰          | ۲      | ۴۸۶        | ۳۱۲ | = | ۲۵۲      | ۲۸۴         | ۱      | ۲۱         | ۴۶۳        | = | ۲۲۹<br>* |
| -            | -      | ۴۸۷        | ۳۱۳ | = | ۲۵۳      | ۶۸          | ۲      | ۱۵         | ۵۱         | ۸ | ۲۳۰      |
| ۸۱           | ۱      | ۵۰۰        | ۳۱۷ | = | ۲۵۴      | ۵۳<br>۵۴    | ۲      | ۶۹         | ۹۵<br>۹۶   | = | ۲۳۱<br>* |
| ۱۴۶<br>۱۴۷   | ۱      | ۵۰۴        | ۳۲۷ | = | ۲۵۵      | ۱۹۷         | ۲      | ۸۱         | ۱۰۷        | = | ۲۳۲      |
| ۱۴۲          | ۱      | ۵۲۶        | ۳۳۴ | = | ۲۵۶      | ۶۵<br>۱۶۵   | ۲<br>۱ | ۹۲         | ۱۱۳        | = | ۲۳۳      |
| ۳۰۸<br>۳۰۹   | ۱      | ۵۵۴        | ۳۶۴ | = | ۲۵۷<br>* | ۹۱          | ۲      | ۹۸         | ۱۲۸        | = | ۲۳۴      |
| ۸۶           | ۱      | ۵۵۹        | ۳۶۸ | = | ۲۵۸      | ۳۵۵<br>۳۵۶  | ۲      | ۱۰۶        | ۱۴۲        | = | ۲۳۵      |
| -            | -      | ۵۶۸        | ۳۷۷ | = | ۲۵۹      | ۱۶۸         | ۲      | ۱۰۸        | ۱۴۳        | = | ۲۳۶      |
| ۳۳۸          | ۱      | ۵۷۳        | ۳۷۹ | = | ۲۶۰      | ۸۰          | ۲      | ۱۴۸        | ۱۵۷        | = | ۲۳۷      |
|              |        |            |     |   |          | ۳۲۲         | ۲      | ۲۰۳        | ۱۸۱        | = | ۲۳۸      |
|              |        |            |     |   |          | -           | -      | ۲۰۸        | ۱۸۳        | = | ۲۳۹      |
|              |        |            |     |   |          | ۱۴۱<br>۱۴۲  | ۱      | ۲۱۱<br>۲۱۲ | ۱۸۴        | = | ۲۴۰      |
|              |        |            |     |   |          | ۲۷۹         | ۱      | ۳۴۲        | ۲۰۱        | = | ۲۴۱      |
|              |        |            |     |   |          | -           | -      | ۲۴۴        | ۲۰۲        | = | ۲۴۲      |
|              |        |            |     |   |          | -           | -      | ۲۴۷<br>۲۴۹ | ۲۰۵        | = | ۲۴۳      |
|              |        |            |     |   |          | ۴۱۸         | ۲      | ۲۵۹        | ۲۱۳        | = | ۲۴۴      |
|              |        |            |     |   |          | ۳۴۱<br>۳۴۲  | ۲      | ۴۲۴        | ۲۸۲        | ۸ | ۲۴۵      |
|              |        |            |     |   |          | ۳۸۸         | ۲      | ۴۲۷        | ۲۸۳        | = | ۲۴۶      |



### ◀ ۳. تجزیه و تحلیل اطلاعات

همانطوری که در جدول تفصیلی فوق‌الذکر ملاحظه شد، تنها در بیست مورد روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کتاب کافی با روایات علی بن ابراهیم در تفسیر قمی موجود به نحوی مشابهند. این شباهت به چند گونه است که در پی می‌آید.

#### □ ۱.۳. انطباق کامل از نظر سند

فقط یک مورد (ردیف ۱۶۱) از حیث سلسله سند بر هم منطبق هستند:

کافی، ج ۵، ص ۴۴۲، روایت ۹: محمد بن یحیی عن احمد بن محمد و علی بن ابراهیم عن ابیه جمیعاً عن ابن محبوب عن هشام بن سالم عن برید العجلی قال: سألت أبا جعفر علیه السلام عن قول الله «و هو الذي خلق من الماء بشراً فجعله نسباً وصهراً» فقال: ان الله تعالى خلق آدم من الماء العذب و خلق زوجته من سنخه فبرأها من أسفل أضلاعه فجرى بذلك الضلع سبب و نسب ثم زوجها آية فجرى بسبب ذلك بينهما صهر و ذلك قوله «نسباً و صهراً» فالنسب يا اخا بني عجل ما كان بسبب الرجال و الصهر ما كان بسبب النساء.

تفسیر قمی، ج ۲، ص ۱۱۴ - ۱۱۵: حدیثی ابی عن الحسن بن محبوب عن هشام بن سالم عن برید العجلی عن ابی عبدالله علیه السلام قال سألته عن قول الله «و هو الذي خلق من الماء بشراً فجعله نسباً و صهراً» قال: ان الله تبارك و تعالى خلق آدم من الماء العذب و خلق زوجته من سنخه فبرأها من أسفل اضلاعه فجرى بذلك الضلع بينهما نسب ثم زوجها آية فجرى بينهما بسبب ذلك صهر فذلك قوله «نسباً و صهراً» فالنسب يا أخابني عجل ما كان من نسب الرجال و الصهر ما كان بسبب النساء.

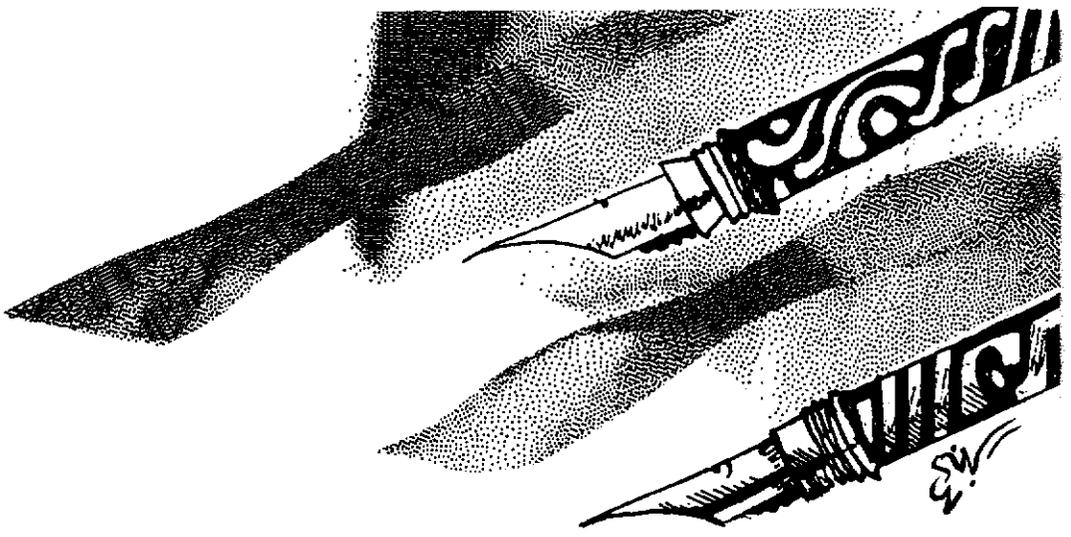
ملاحظه می‌شود در همین مورد نیز روایت کافی از امام باقر علیه السلام و روایت تفسیر قمی از امام صادق علیه السلام است.

#### □ ۲.۳. اختلاف سلسله سندها در یک راوی

در چهار مورد، سلسله سندها در یک راوی اختلاف می‌یابند (ردیف‌های ۷۵، ۱۴۶، ۱۹۴ و ۲۵۷). دو مورد از آن را به عنوان نمونه ذکر می‌کنیم:

الف) کافی، ج ۲، ص ۳۵۷، روایت ۲: علی بن ابراهیم عن ابیه عن ابن ابی عمیر عن بعض اصحابه عن ابی عبدالله علیه السلام قال: من قال فی مؤمن ماراته عیناه و سمعته أذناه فهو من الذین قال الله: «ان الذین یحبون ان تشیع الفاحشه فی الذین آمنوا لهم عذاب الیم».





تفسیر قمی، ج ۲، ص ۱۰۰: حدیثی ابی عن ابن ابی عمیر عن هشام عن ابی عبداللہ رضی اللہ عنہ قال: من قال فی مؤمن مارأت عیناه و ما سمعت اذناه کان من الذین قال اللہ فیهم «ان الذین یحبون ان تشیع الفاحشه...».

ب) کافی، ج ۸، ص ۳۶۴، روایت ۵۴۴: علی بن ابراهیم عن ابيه عن حماد بن عیسی عن ابراهیم بن عمر الیمانی عن ذکره عن ابی عبداللہ رضی اللہ عنہ فی قول اللہ «و بشر الذین آمنوا ان لهم قدم صدق عند ربهم» فقال هو رسول اللہ.

تفسیر قمی، ج ۱، ص ۳۰۸ - ۳۰۹: حدیثی ابی عن حماد بن عیسی عن ابراهیم بن عمر الیمانی عن ابی عبداللہ رضی اللہ عنہ فی قوله: «قدم صدق عند ربهم» قال هو رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آله و سلم.

### □ ۳.۳. اختلاف سلسله سند در بیش از یک راوی

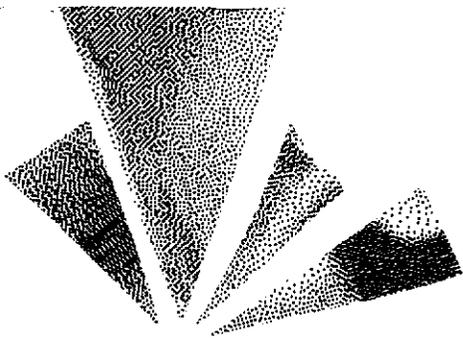
در ده مورد، اختلاف سلسله سند در بیش از یک راوی است (ردیف‌های ۲۰، ۲۶، ۵۷، ۸۳، ۹۲، ۱۴۷، ۱۷۱، ۱۷۵، ۲۲۹ و ۲۳۱). به جهت رعایت اختصار به ذکر دو نمونه اکتفا می‌شود:

الف) کافی، ج ۱، ص ۲۷۳، روایت ۳: علی بن ابراهیم عن محمد بن عیسی عن یونس عن ابن مسکان عن ابی بصیر قال: سألت ابا عبد الله رضی اللہ عنہ عن قول الله عز وجل «يسئلونك عن الروح قل الروح من أمر ربي» قال خلق أعظم من جبرئيل و ميكائيل، كان مع رسول الله صلی اللہ علیہ و آله و سلم و هو مع الائمه و هو من الملكوت.

تفسیر قمی، ج ۲، ص ۲۶: حدیثی ابی عن ابن ابی عمیر عن ابی بصیر عن ابی عبداللہ رضی اللہ عنہ قال: هو ملك أعظم من جبرئيل و ميكائيل و كان مع رسول الله صلی اللہ علیہ و آله و سلم و هو مع الائمه و فی خبر اخر هو من الملكوت.

ب) کافی، ج ۱، ص ۳۸۴، روایت ۸: علی بن ابراهیم عن ابيه قال: قال علی بن حسان





لابی جعفر علیه السلام یا سیدی ان الناس ینکرون علیک حدائثه سنک. فقال: و ما ینکرون من ذلك قول الله؟ لقد قال الله عزّ و جلّ لنبیّه صلی الله علیه و آله «قل هذه سبیلی أدعو الی الله علی بصیرة أنا و من اتبعنی» فوالله ما تبعه الا علی علیه السلام و له تسع سنین و أنا ابن تسع سنین.

تفسیر قمی، ج ۱، ص ۳۵۸: قال علی بن ابراهیم حدثنی أبی عن علی بن أسباط قال قلت لابی جعفر الثانی علیه السلام یا سیدی ان الناس ینکرون علیک حدائثه سنک قال و ما ینکرون علی من ذلك فوالله لقد قال الله لنبیّه صلی الله علیه و آله «قل هذه سبیلی...» فما اتبعه غیر علی علیه السلام و كان ابن تسع سنین و أنا ابن تسع سنین.

#### □ ۴.۳. حذف سلسله سند در تفسیر قمی

در پنج مورد، حدیث از قول علی بن ابراهیم در تفسیر قمی نقل شده و زنجیره راویان حذف گردیده است (ردیف‌های ۶، ۴۹، ۹۱، ۹۸ و ۱۸۷). البته در چهار مورد، سلسله سند در کتاب کافی آمده و در یک مورد مرحوم کلینی نیز تصریح به رفع نموده است. از این مورد نیز دو نمونه یاد می‌کنیم:

الف) کافی، ج ۱، ص ۱۶۳، روایت ۴: علی بن ابراهیم عن محمد بن عیسی عن یونس بن عبدالرحمن عن ابن بُکَیْر عن حمزة بن محمد عن ابی عبداللّٰه علیه السلام قال: سألته عن قول اللّٰه «و هدیناه التّٰجدین» قال: نجد الخیر و الشر.

تفسیر قمی، ج ۲، ص ۴۲۲: قال علی بن ابراهیم فی قوله «و هدیناه التّٰجدین» قال: بیّنّاه طریق الخیر و الشر.

ب) کافی، ج ۲، ص ۱۶، روایت ۵: علی بن ابراهیم عن أبیه عن القاسم بن محمد عن المنقری عن سفیان بن عیینه عن ابی عبداللّٰه علیه السلام سألته عن قول اللّٰه عزّ و جلّ «الّا من أتى اللّٰه



بقلب سليم» قال: القلب السليم الذي يلقي ربّه و ليس فيه أحدٌ سواه قال: و كل قلب فيه شرك أو شك فهو ساقط و أنما ارادوا الزهد في الدنيا لتفرغ قلوبهم للاخرة.

تفسیر قمی، ج ۲، ص ۱۲۳: قال علی بن ابراهیم فی قوله «ألا من اتى الله بقلب سليم» قال: القلب السليم الذي يلقي الله و ليس فيه أحد سواه.

#### ۴. نتیجه

نتایج به دست آمده از این تحقیق به شرح ذیل است:

۱ □ روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کتاب کافی مجموعاً ۲۷۹ مورد است: اصول: ۱۰۱ مورد، فروع: ۱۴۴ مورد و روضه: ۳۴ مورد.

۲ □ از مجموع ۲۷۹ مورد روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کتاب کافی، ۵۳ مورد اصلاً در تفسیر قمی نیامده است: اصول: ۲۱ مورد، فروع: ۲۵ مورد و روضه: ۷ مورد.

۳ □ از ۲۲۶ مورد باقی مانده، در اکثر موارد ارتباطی بین روایات کافی و تفسیر قمی ملاحظه نگردد.

۴ □ تنها در بیست مورد روایات تفسیری علی بن ابراهیم در کتاب کافی با روایات تفسیری علی بن ابراهیم در تفسیر قمی به نحوی مشابهت و همگونی دارند.

۵ □ از بین موارد مشابه، فقط در یک مورد از حیث سلسله سند بر هم انطباق دارند. نظر به این که از موارد معدود همگون، در پنج مورد سلسله سند در تفسیر قمی نیامده، معلوم نیست مستند مرحوم کلینی همین روایات موجود در تفسیر قمی باشد و در سایر موارد نیز، با توجه به اختلاف در زنجیره روایات، باز استناد مؤلف کافی را به روایات تفسیر قمی موجود، مردّد می نماید.

#### تشکر و قدردانی

لازم است مراتب تشکر خود را از استاد ارجمند، حضرت آیت... محمد هادی معرفت و همکار گرامی، جناب آقای دکتر شاکر که در به ثمر رسیدن این تحقیق از هیچ مساعدتی دریغ نورزیدند، اعلام دارم و مزید توفیق ایشان را از خدای متعال مسئلت نمایم.



۱. تاریخ ولادت و وفات شیخ ابوالحسن علی‌بن ابراهیم بن هاشم قمی، به طور دقیق مشخص نیست. آنچه که مسلم است، این که وی در اواخر قرن سوم و اوایل قرن چهارم می‌زیسته است. شیخ طوسی او را از اصحاب امام هادی علیه السلام دانسته و شیخ صدوق و در *عیون اخبار الرضا* اظهار داشته که حمزه بن محمد بن جعفر در سال ۳۰۷ ق. از علی بن ابراهیم روایت شنیده است.
۲. ر.ک. معرفت، *محمد هادی: صیانة القرآن من التحریف*، قم، دفتر انتشارات اسلامی وابسته به جامعه مدرسین، ۱۴۱۳ق، ص ۲۲۹، و نیز ر.ک. استادی، رضا: *آشنایی با تفاسیر قرآن مجید و مفسران*، قم، مؤسسه در راه حق، ۱۳۷۷ش، ص ۱۲.
۳. شایان ذکر است که نویسنده در این مقدمه آورده است: «ما روایاتی را ذکر می‌کنیم که از طریق مشایخ و ثقات امامیه به ما رسیده و آنها از کسانی نقل کرده‌اند که خداوند، پیروی آنها را واجب کرده و اعمال انسان‌ها در سایه اعتقاد به آنها پذیرفته می‌شود.» (تفسیر قمی، ج ۱، ص ۴).
۴. کسانی چون احمد بن هلال العبر تائی، امیه بن علی القیسی، سعد بن طریف الحنظلی، سلیمان بن داود المنقری از جمله روایان این تفسیر هستند که در کتب رجال به غلو، قصه‌پردازی و جعل حدیث درباره آنها تصریح شده است.
۵. مواردی که شماره ردیف همراه با ستاره آمده نشانگر نوعی ارتباط بین روایت کافی با روایت تفسیر قمی است. مواردی که شماره جلد و صفحه تفسیر قمی مشخص نشده و جدول مربوط با خط تیره علامت‌گذاری شده، نشانگر آن است که تفسیر آیه در تفسیر قمی نیامده است. در بقیه موارد ارتباطی بین روایت کافی با روایت تفسیر قمی وجود نداشته است. حرف «ش» نشان‌دهنده شماره روایت است. در این تحقیق از کافی و تفسیر قمی با مشخصات زیر استفاده شده است:
- الکافی*: دارالکتب الاسلامیه، تهران، ۱۳۶۳ش، چاپ پنجم.
- تفسیر قمی*: با تصحیح سید طیب موسوی جزائری، قم، مؤسسه دارالکتاب، چاپ چهارم، ۱۳۶۷ش.
۶. اختلاف شماره روایت تفسیری با شماره ردیف جدول، از این روست که گاهی در کتاب کافی درباره یک موضوع بیش از یک روایت تفسیری وجود دارد.